शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष: 3, अंक:4; जनवरी-जून, 2022
पृष्ठ संख्या : 127-134

कवि शमशेर की काव्य-भाषा

✍ **आशीष जायसवाल**

शोध-सार:

काव्य-भाषा में शमशेर ने हिन्दी और उर्दू के बीच सेतु का काम किया। हिन्दी को उर्दू की मिठास, तराश और लोच देने का श्रेय शमशेर को ही जाता है। यही काम प्रेमचन्द ने हिन्दी गद्य क्षेत्र में किया। उनकी काव्यभाषा मुख्यतः बिम्बात्मक है। भाषिक संवेदना के साथ बिम्बों-प्रतीकों का अद्भुत प्रयोग उनकी कविताओं को विशेष बनाता है। शमशेर के यहाँ वाक्य ही भाषा की इकाई है और उस में वह बोलचाल के मुहावरे और लय का प्रयोग करते हैं। आज के अधिकतर युवा कवियों ने शमशेर की भाषा-परम्परा को ही अपने लिए अनुकरणीय माना है। प्रस्तुत आलेख में उनकी काव्यभाषा को समझने एवं विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

बीज-शब्द: *प्रयोगवाद, बिम्ब, काव्य, काव्यभाषा, छायावाद, प्रतीक, चित्र, कविता*

प्रस्तावना :

शमशेर मूल रूप से प्रयोगवादी कवि हैं। इस दृष्टि से वे अज्ञेय की परम्परा में आते हैं। पर शमशेर और अज्ञेय में अंतर यह है कि शमशेर के प्रयोगवाद का रथ संवेदना का धरातल नहीं छोड़ता। शमशेर का काव्य व्यक्तित्व अपने में असाधारण है। वे कवि-कर्म के प्रति सचेत रचनाकार हैं। वे आवेग के नहीं, संयम और सुनियोजन के कवि हैं। उनकी कविता छायावादी कवियों की अनुभूतिक तरलता और उत्तर छायावादियों की सहजता से सायास रूप से भिन्न है। उनमें हिन्दी कविता की परम्परा से दूरी बनाकर अपनी विशिष्ट पहचान अर्जित करने की एक शांत और सादी आकांक्षा दिखती है।

विश्लेषण :

शमशेर ने स्वाधीनता एवं क्रांति को अपनी निजी चीज़ की तरह अपनाया। इंद्रिय सौन्दर्य के सबसे संवेदनापूर्ण चित्र देकर भी वे अज्ञेय की तरह सौदर्यवादी नहीं हैं। उनमें एक ऐसा ठोसपन है, जो उनकी विनम्रता को ढुलमुल नहीं बनने देता। साथ ही किसी एक चौखट में बेधने भी नहीं देता। शमशेर उर्दू काव्यभाषा के संस्कार को हिन्दी कविता में लाये। इन पर उर्दू और पाश्चात्य काव्यधाराओं का जितना प्रभाव पड़ा, ये उतने ही मौलिक हुए।

शमशेर हिन्दी के पहले कवि हैं, जो स्पेसिंग अथवा अन्तराल को काव्य-भाषा का सार्थक अंग बनाने की कोशिश करते हैं। वे शब्दों और पंक्तियो के मध्य अन्तराल का बहुत अर्थगर्भी प्रयोग करते हैं। इन्हें समझे बिना उनकी कविता के समुचे मर्म को पकड़ पाना बहुत मुश्किल है। शमशेर की काव्यभाषा अपने में बिल्कुल अलग है। इसी वजह से कई बार उसे समझना बहुत मुश्किल होता है। विजयदेवनारायण साही जी भी यही नयापन देखते हैं और कहते हैं-

> शमशेर ने कविता के छन्द्र, लय, शब्दावली सब में बहुत नये-से प्रयोग किये हैं। उन्होंने ऐसे नये प्रतीको एव बिम्बों का सृजन किया है, जो कविता के अभ्यस्त पाठकों और श्रोताओं को अक्सर चुनौती की तरह लग सकते हैं।(उपाध्याय 1996:37)

कविता मूलरूप से भाषा कर्म है। इस बात को अगर बढ़ाकर कहें, तो हम कह सकते हैं कि भाषा ही कविता है। किसी भी रचना की चर्चा करते वक़्त या तो हम उसके अर्थ से आरम्भ करके भाषा सौन्दर्य तक जाते हैं या भाषा से आरम्भ करके अर्थ तक जाते हैं अर्थात हम कह सकते हैं कि किसी भी रचना को समझने का आरम्भिक एंव अन्तिम बिन्दु उसकी भाषा है।

कविता में भाषा का स्वतंत्र रूप से महत्त्व है। वह केवल विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम नहीं है। भाषा की रचनात्मकता के स्तर पर ही कवि की अनुभूति एवं कल्पना की सीमाएँ बँधती या खुलती हैं।

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक में काव्य-भाषा का भेद निरूपित करते हुए लिखा है-

> सामान्य भाषा शब्दों के साथ उनके सुनिश्चित अर्थ होने को उचित एंव वांछनीय समझती है, जबकी काव्य भाषा के लिए यह सुनिश्चित सह्य नहीं है। वह शब्दों के रूप

> को बार-बार अमूर्त करती है। जैसे ही यह अनुभव होता है कि किसी शब्द के साथ कोई विशिष्ट अर्थ बहुत अधिक संबद्ध हो गया है; कवि बलपूर्वक उसे अलग कर लेना चाहता है, अर्थ की स्थूलता को तोड़कर उसकी अमूर्त ऐंठ उन्मुख प्रवृत्ति को पुन: स्थापित करना चाहता है।(चतुर्वेदी 1964:14)

काव्य-भाषा वस्तुतः चित्रात्मक भाषा ही होती है। इसलिए कुछ आलोचकों ने कविता को एक बोलता हुआ चित्र कहा है और चित्र को एक मूक कविता। सामान्य भाषा को संवेदात्मक चित्रों की भाषा में बदलने का काम वह बिंब प्रक्रिया करती है, जिसके अधीन अलंकार प्रतीक, मिथ यहाँ तक कि स्वयं बिम्ब भी होते हैं। रोजमर्रा के प्रयोग में आने वाली भाषा बिम्ब का स्वभाव और रूप ग्रहण कर कविता बन जाती है। इसलिए लक्षणा एंव व्यंजना जैसी शब्द शक्तियाँ अधिक महत्त्वपूर्ण मानी गयी हैं; क्योंकि वे भावनात्मक भाषा के निर्माण में काफी बड़ी भूमिका अदा करती हैं।

शमशेर की आलोचना करते समय उनकी कविता में कथ्य (प्रचलित अर्थ में) एक सामाजिकता के प्रभाव की चर्चा बार-बार होती है। यह बात प्रकारान्तर वाले प्रश्न से जुड़ी हुई है; क्योंकि उन्हें कहना नहीं है बोध भी नहीं देना है। वे कविता से किसी धर्मगुरु, किसी समाज सुधारक या किसी राजनीतिज्ञ का काम नहीं लेना चाहते। शमशेर कविता की सार्थकता 'रचनाकर्म' मानते हैं, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनके यहाँ समाज का नितान्त अभाव है। भाषा प्रयोग के प्रति जागरूकता उनके द्वारा दिये गये वक्तव्यों एवं कविताओं द्वारा भी पता लगता है। उनके एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा-

> असल में मेरी दृष्टि शिल्प-शैली पर शुरू से ही जियादा रही है i'm very conscious of style मैं बचपन से ही उर्दू एवं हिन्दी में तुलनात्मक दृष्टि से भी पढ़ता था। इंग्लिश से भी उन्हें कम्पेयर करता था मैं ग्रैमर पर बहुत ध्यान देता था। It was a joy for me, always a joy my imagination had been awaked from the very beginning.(मलजय 1979:27)

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि शमशेर के यहाँ 'भाषा' रचनात्मक एवं संरचनात्मक दोनों स्तरों पर विशेष महत्व रखती है।

शमशेर काव्य-भाषा प्रायः संज्ञाप्रधान होती है, यद्यपि उनका संघर्ष क्रिया प्रधान भाषा अर्जित करने का रहा है। वस्तुतः उनका चित्रकार इस संघर्ष को बाधित करता है। चित्रकार की दृष्टि वस्तुओं पर रूपाकारों पर टिकती है। उसके लिए संज्ञाएँ महत्वपूर्ण हो उठती हैं। एक पीली शाम', 'सींग और नाखून' व 'शिला का खून पीती थी' में इसीलिए संज्ञापदों की प्रधानता है। वस्तुतः जहाँ भी उनका चित्रकार किसी वातावरण की सृष्टि बहुलता करने लगता है, संज्ञापदों की संख्या बढ़ जाती है।

शमशेर के विषय में अक्सर कहा जाता है कि वे अपनी अनुभूति केवल प्रतीकों एवं बिम्बों द्वारा ही कराते हैं; पर ये सर्वथा मान्य नहीं, वे भाषा द्वारा भी अनुभूत कराते हैं।

इनकी एक रचना है 'सूर्यास्त' इसमें वे उस जल की बात करते हैं जो विशद है और इस विशदता को प्रकट करने के लिए वे बिंबों एवं प्रतीकों का सहारा नहीं लेते, वरन मात्र शब्दों द्वारा अपनी बात रखते हैं-

फेन फूलों से गुथी हुई,
सागर लटों के बीच बीच।
थाह लेता,
विशद,
जल विशद,
विशद।(सिंह,सं 1990:149)

शमशेर की कविता में एक आंतरिक संवाद, या एकालाप लगातर चलता है। कोई एक पाठक है, जो सदैव उनके समक्ष है, जिसे वे उद्बोधन देते रहते हैं। यह उनका दूसरा आधार भी है। उनकी एक कविता 'सावन' का अन्तिम अंश मोनोलॉग की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है-

आज मेरे लिए तुम
उसकी हद हो
उस बात की हद हो
जो मेरे लिए हो- तुम

वह मेरी
हद हो
तुम
तुम मेरे लिए
मेरी हद हो मेरी हद हो
तुम
मेरे
लिए...(सिंह,सं1990:73)

कविता में तुम के साथ कवि का संवाद अन्त में एकालाप हो जाता है। यहाँ पर कवि कन्फ्यूज्ड नहीं है, वे 'मैं और तुम' में डूब गये हैं। शमशेर की एक और विशेषता यह है कि वे क्रियापदों के बीच में क्रियाविहीन पद के संयोजन से विशिष्ट प्रभाव पैदा करते हैं। इसी का एक प्रयास हमें 'यूरोपीय संगीत सुनकर' में दिखता है। शमशेर की कविताओं में सर्वनाम के कई प्रकार के प्रयोग भी हमें सायास ही मिल जाते हैं। वे सर्वनाम में परिवर्तन द्वारा वह निकटता एंव दूरी का बोध कराते हैं और इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हमें 'टूटी हुई, बिखरी हुई' कविता में हमे मिलता है। शमशेर रहस्य का प्रभाव पैदा करने के लिए भी सर्वनामों का प्रयोग करते दिखते हैं-

वह पैदा हुआ है जो मेरी मृत्यु को सँवारने वाला है। (सिंह,सं 1990:108)

यहाँ 'वह' एक विशेष प्रकार के रहस्य एवं कौतुहल को उभारता है। शमशेर के यहाँ मोटे तौर पर भाषा के तीन स्तर हैं। पहला स्तर उनकी गजलों में दिखाई देता है। दूसरा स्तर 'घनीभूत पीड़ा' जैसी कविताओं में मिलता है, जो छायावादी काव्य-भाषा से प्रभावित है और तीसरा भाषा स्तर- राग, टूटती हुई, बिखरी हुई' 'आओ', 'दो मोती कि दो चंद्रमा होते' और 'नीला दरिया बरस रहा' जैसी रचनाओं में है,जहाँ बोलचाल की भाषा प्रमुख हो उठी है। इस तीसरे भाषा स्तर पर शमशेर का खास निजी मुहावरा लक्ष्य किया जा सकता है। इन कविताओं में लोक भाषा के सायास प्रयोग हैं और इन प्रयोगों की सफलता संदिग्ध जान पड़ती है।

शमशेर की काव्य-भाषा में अव्ययों का महत्वपूर्ण स्थान है। शमशेर के अलावा उनका ऐसा सार्थक प्रयोग मीर, मौमिन, गालिब और निराला के यहाँ ही दृष्टिगत होता है। आह, हाय, अहा, तो ही, भी आदि शमशेर के वाक्यों में विशिष्ट अर्थ छाया अर्जित करने के लिए प्रयुक्त हुए हैं। जैसे-

और

जादू टूटता है इस उषा का अब

सर्योदय हो रहा है। (सिंह,सं 1990: 149)

शमशेर की काव्य-भाषा में कहीं-कहीं संगीत की-सी स्वयं पर्याप्तता का यह गुण की विशिष्टता मिलती है। शमशेर की 'वह सागर' इसका सुन्दर उदाहरण है-

वह सागर

उठा जो, उठा, और-और-और

पाने मुझे

अपने अंक में ही लेने मुझे,

कहाँ टकराता

अपनी मौन लहरें -

मैं हूँ यहाँ

निश्चलतम। (अरगड़े 1988: 56)

यहाँ शब्द केवल भाव संकेत या टोन में बदल गये हैं। संगीत में भी भाव संकेत या 'टोन' ही प्रमुख होता है। शमशेर की सबसे बड़ी खूबी उनके शब्दों में है,जो हीरों की तरह कई दिशाओं में प्रकाश फेंकते हैं। 'एक नीला आइना बेठोस' ऐसी ही एक कविता है। शमशेर की कविताएँ 'अरथ अमित अति आखर थोरे' को चरितार्थ करती है। उनकी कोशिश कम से कम शब्दों में अपनी बात कह देने की होती है फालतू शब्द उनके यहाँ नहीं के बराबर मिलेंगे।नामवर सिंह का भी यही मानना है । वे कहते हैं-

विचारों की बकवास और भावों क भड़ास से बचकर उन्होंने सूक्ष्म से सूक्ष्म मूर्त इन्द्रिय-बोधों के दृढ़ आधार पर कविता का ढाँचा खड़ा किया।(सिंह,सं 1990:158)

शमशेर की कविता में उच्चारण का विशेष महत्व है। इसका महत्व हमें 'संध्या' जैसी कविताओं के सन्दर्भ में स्पष्ट होता है। इसके अलावा शमशेर के भाषिक रचाव में शाब्दिक आवर्त बहुत महत्वपूर्ण है। शब्दों के दोहराव से वे एक प्रकार की गूंज, एक प्रकार के सिलसिले का आभास कराते हैं, जो अर्थ को विशिष्ट ढंग से अर्जित करने में सहायता देता है। 'ये लहर घेर लेती हैं', 'दो बातें', 'मॉडल आर्टिस्ट' और 'नीला दरिया बरस रहा' में शाब्दिक आवर्ती के अर्थगर्भी प्रयोग लक्ष्य किये जा सकते हैं।

शमशेर ने दो प्रकार से मुक्तछन्दों का प्रयोग किया है- छन्दोबद्ध पंक्ति को तोड़कर और बोलचाल की लय को आधार बनाकर। पहले प्रकार का प्रयास 'बात बोलेगी' जैसे कविताओ में किया गया है-

बात बोलेगी हम नहीं भेद खोलेगी बात ही। (सिंह,सं 1990: 43)

वाक्य विन्यास की विविधता शमशेर में अपने समकालीन कवियों की अपेक्षा कहीं ज्यादा है। इनके यहाँ 'मैंने शाम से पूछा' जैसे सरल वाक्य मिलेंगे, तो शाम होने को हुई, लौटे किसान, दूरे पेड़ों में बढ़ा खग-ख' जैसे संयुक्त वाक्य भी। इन्हीं विशेषताओं के कारण रंजना अरगड़े शमशेर की विशेषता करते हुए कहती हैं-

> भाषा ही वह बिन्दु है, जहाँ हम शमशेर को उनके समकालीनों और आज के कवियों से अलग कर सकते हैं।(अरगड़े 1988:72)

निष्कर्ष:

काव्य-भाषा में शमशेर ने हिन्दी और उर्दू के बीच सेतु का काम किया। हिन्दी को उर्दू की मिठास, तराश और लोच देने का श्रेय शमशेर को ही जाता है। यही काम प्रेमचन्द ने हिन्दी गद्य क्षेत्र में किया। आधुनिक हिन्दी काव्यभाषा को समझने के लिए हमें शमशेर एवं अज्ञेय को दो भाषिक छोरों पर रखकर देखना होगा। शमशेर के यहाँ वाक्य ही भाषा की इकाई है और उस में वह बोलचाल के मुहावरे और लय का प्रयोग करते हैं। आज के अधिकतर युवा कवियों ने शमशेर की भाषा-परम्परा को ही अपने लिए अनुकरणीय माना है।

ग्रंथ-सूची :

अरगड़े, रंजना.कवियों के कवि शमशेर.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन, 1988.

उपाध्याय, मंजुल.अथतो काव्य जिज्ञासा.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन, 1996.

कुमार,निर्भय. शमशेर बहादुर सिंह की आलोचना दृष्टि. नई दिल्ली:लोकभारती प्रकाशन, 2019.

चतुर्वेदी, रामस्वरूप.भाषा और संवेदना.कलकत्ता:भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1964.

तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद. समकालीन हिन्दी कविता. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2010.

मलजय.कविता से साक्षात्कार.हापुड़:संभावना प्रकाशन, 1979.

मिश्र, गिरिश्वर,संपा.शमशेर बहादुर सिंह संचयिता.नई दिल्ली: शिल्पायन, 2017.

श्रोत्रिय, प्रभाकर. भारतीय साहित्य के निर्माता शमशेर बहादुर सिंह. दिल्ली:साहित्य अकादमी, 2011

सिंह, दूधनाथ,संपा. एक शमशेर भी है. नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन, 2011.

सिंह, नामवर, सं.प्रतिनिधि कविताएँ- शमशेर बहादुर सिंह.नई दिल्ली:रजकमल प्रकाशन, 1990.

सिंह, नामवर.कविता की ज़मीन और ज़मीन की कविता.नई दिल्ली:राजमकल प्रकाशन, 2016.

सिंह, शमशेर बहादुर, संपा.प्रतिनिधि कविताएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1990.

संपर्क-सूत्र:
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
संपर्क: 9795118421
ई-मेइल: ashishjaiswal916@gmail.com